edit:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:26 PM Page 188

हीरक महोत्सवी साप्ताहिक विवेक

दिनांक 28 मार्च 2010

संपादकीय

दधिचि !

दधीचि!

राष्ट्र सेवा में अपना जीवन समर्पित करनेवाले नानाजी देशमुख आज प्रत्यक्ष रूपसे हमारे बीच नहीं हैं, फिर भी नानाजी ने पिछले अनेक वर्षो में जो कार्य खड़े किये है, उनके माध्यम से नानाजी का अस्तित्व स्थायी रूप से रहने वाला है। राष्ट्रसेवा की प्रेरणा से प्रेरित व्यक्ति स्वयं के व्यक्तिगत सुख और हितों को पीछे छोड़कर कितना बड़ा काम कर सकता है, इसका एक प्रत्यक्ष चित्रण नानाजी का केवल स्मरण मात्र से अपनी आँखो के सामने दिखाई देता है। अपनी युवावस्था में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के नाते राष्ट्रसेवा के कार्य में उन्होंने स्वयं को समर्पित कर दिया। राष्ट्राय स्वाहा, इदं न मम्, इसे ध्यान में रखकर राष्ट्रकार्य करने का नानाजी ने निश्चय किया। राष्ट्रसेवा करते-करते उन्होंने अपने देह को चंदन की तरह घिसकर क्षीण किया। राष्ट्रकार्य में स्वयं को पूर्णरूप से समर्पित करने वाले नानाजी ने पीछे मुड़कर कभी देखा नहीं। नानाजी ने अपने गुणों और संघ संस्कारों के बल पर राजनीतिक, शैक्षणिक और सामाजिक क्षेत्रो में इतने विशाल कार्य खड़े किया है, जिसे देखकर किसी को भी आश्चर्य होगा।

नानाजी ने जिस समय संघ कार्य की शुरूआत की, वह समय एकदम प्रतिकूल था, किन्तु प्रवाह के विरूद्ध संघर्ष करने की बाल घुट्टी लेने वाले नानाजी ने उस प्रतिकूल परिस्थिति की चिंता किये बिना अपना कार्य जारी रखा। 1948 में संघ पर प्रतिबंध के काल में कांग्रेस नेताओं के घर में ही रहकर प्रतिबंध हटाने हेतु नानाजी ने प्रयास प्रारंभ किये और इन प्रयासों को देखने से इस कुशल संगठक को मनुष्य को परस्पर जोड़ने की कला किस तरह हासिल थी, इसका अनुमान किया जा सकता है। उत्तर भारत में आज सर्वत्र सरस्वती शिशु मंदिर का जो जाल फैला है, उसकी शुरूआत नानाजी ने ही की थी। इसे देखकर उनके भीतर के दूरद्रष्टा का दर्शन होता है। भारतीय जनसंघ का दायित्व संभालने के बाद पं0 दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी वाजपेयी जैसे कार्यकर्ता के साथ जनसंघ का कार्य देशभर में खड़ा करने में नानाजी ने अथक परिश्रम किया। भारतीय जनसंघ अथवा आज भारतीय जनता पार्टी के रूप में जो देशव्यापी दल गठित हुआ है, उसमें नानाजी जैसे अनेक कार्यकर्ताओं का बड़ा परिश्रम लगा है। राजनीतिक दल का कार्य करते समय सभी क्षेत्रों के लोगों के साथ उनका संपर्क था। 1974 के दौरान बिहार में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में तत्कालीन सरकार के खिलाफ जो आंदोलन छेड़ा गया था, उस आंदोलन का नेतृत्व जयप्रकाश नारायण को करना चाहिये, इसके लिए नानाजी ने जयप्रकाशजी को राजी कराया और इस आंदोलन में नानाजी ने जयप्रकाश जी का एक भाई के समान पूरा साथ दिया। पुलिस की लाठियों की मार अपने शरीर पर लेकर उन्होंने जयप्रकाश नारायण जी की सुरक्षा की। बिहार आंदोलन और उसके बाद इंदिरा गांधी द्वारा जारी किये आपातकाल से देश के पूरे राजनीतिक परिदृश्य को ही बदल दिया। आपातकाल के दौरान आंदोलन और उसके बाद जनता पार्टी के गठन में नानाजी का योगदान काफी महत्वपूर्ण था, इससे सभी भली-भाँति परिचित है।

1977 के चुनाव में कांग्रेस की करारी हार के बाद केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनाने में नानाजी की जो चाणक्य नीति दिखाई दी, उसका कोई मुकाबला नहीं। 1967 में कांग्रेसी शासन के खिलाफ विभिन्न राजनीतिक दलों को एकत्रित कर संयुक्त विधायक दल का एक सफल प्रयोग देश ने अनुभव किया। इसके लिए भी नानाजी ने कड़ी मेहनत की। संघ परिवार के बाहर के लोगों को एक साथ जोड़कर उनके संघ सबंधी गलतफहमियों और भ्रांतियों को दूर कर नानाजी ने जो राजनीति की, वह सराहनीय साबित हुई। लेकिन सत्ता में जनता पार्टी की सरकार के आने के बाद वे स्वयं सत्तामोह में बिल्कुल भी फंसे नहीं। यद्यपि मोरारजी भाई देसाई द्वारा उन्हें दी गई मंत्री पद की पेशकश को सविनय नकार दिया। बाद में उन्होंने सक्रिय राजनीति से सन्यास लेकर स्वयं को समाजसेवा के लिए समर्पित कर दिया।

पं. दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में शुरू किये गये दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से उ.प्र. में गोंडा, महाराष्ट्र में बीड और म.प्र. में चित्रकूट में समाज के निचले स्तर के लोगो का जीवन स्तर ऊँचा उठाने के लिए नानाजी ने जो प्रकल्प शुरू किये और इसके माध्यम से इन क्षेत्रों में जो परिवर्तन कर दिखाये है, इसने सभी को आश्चर्य-चकित कर दिया। पं. दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद को प्रत्यक्ष कार्यान्वित करने के उद्देश्य से नानाजी ने विभिन्न कार्य खड़े किये और उसे सफल बनाकर दिखाया। गांव-गांव में समाज के निचले स्तर के व्यक्ति का सर्वांगीण विकास का बीजमंत्र लेकर नानाजी ने गोंडा, चित्रकूट और बीड क्षेत्र में अपने कार्य के माध्यम सें अपेक्षित परिवर्तन का अनुभव हासिल किया है। तत्कालीन राष्ट्रपति डा. नीलम संजीव रेड्डी और अभी हाल ही में राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम समेत अनेक महानुभाव नानाजी के कार्यो से बेहद प्रभावित हुए।

आयु के बीस साल में स्वयं को संघकार्य में समर्पित कर देने वाले नानाजी ने संघकार्य में अपनी स्वयं की एक अमिट छाप छोड़ी है। उसके पश्चात राजनीतिक क्षेत्र में उन्हें जो दायित्व सौंपा गया, उसका सफलतापूर्वक निर्वहन किया। सर्वेषाम् अविरोधेन की वृत्ति को स्वयं में ढालकर बड़े-बड़े संघविरोधियों को भी उन्होंने अपना बना लिया और संघ के बारे में उनकी गलतफहमी और भ्रांतियों को दूर किया। अधिक आयु होने पर राजनीति को पूरी तरह से त्यागकर नानाजी ने सामाजिक कार्य हेतु स्वयं को समर्पित किया। चित्रकूट परिसर में नानाजी ने जो प्रकल्प खड़े किये है, उससे उन प्रकल्पों के निर्माण में इस ऋषितुल्य व्यक्ति ने कितने कष्ट उठाये, इसकी कल्पना की जा सकती है।

देव-दानव के युद्ध में देवों को शस्त्रास्त्र बनाने हेतु दधीची ऋषि ने देहत्याग कर अपनी अस्थियाँ दी थी। नानाजी देशमुख को भी इस युग का दधीची मानना चाहिये। जीवनपर्यंत सतत् मातृभूमि की चिंता और उसके लिए अक्षरशः अपना सर्वस्व अर्पण करनेवाले और मृत्यु के बाद देहदान करने वाले नानाजी आधुनिक दधीची नहीं है क्या? इस ऋषितुल्य व्यक्तित्व को शतशः प्रणाम !!!